दैत्य अबियोयो की वापसी

पीट सीगर, पॉल डु बोइस

दैत्य अबियोयो की वापसी

पीट सीगर, पॉल डु बोइस
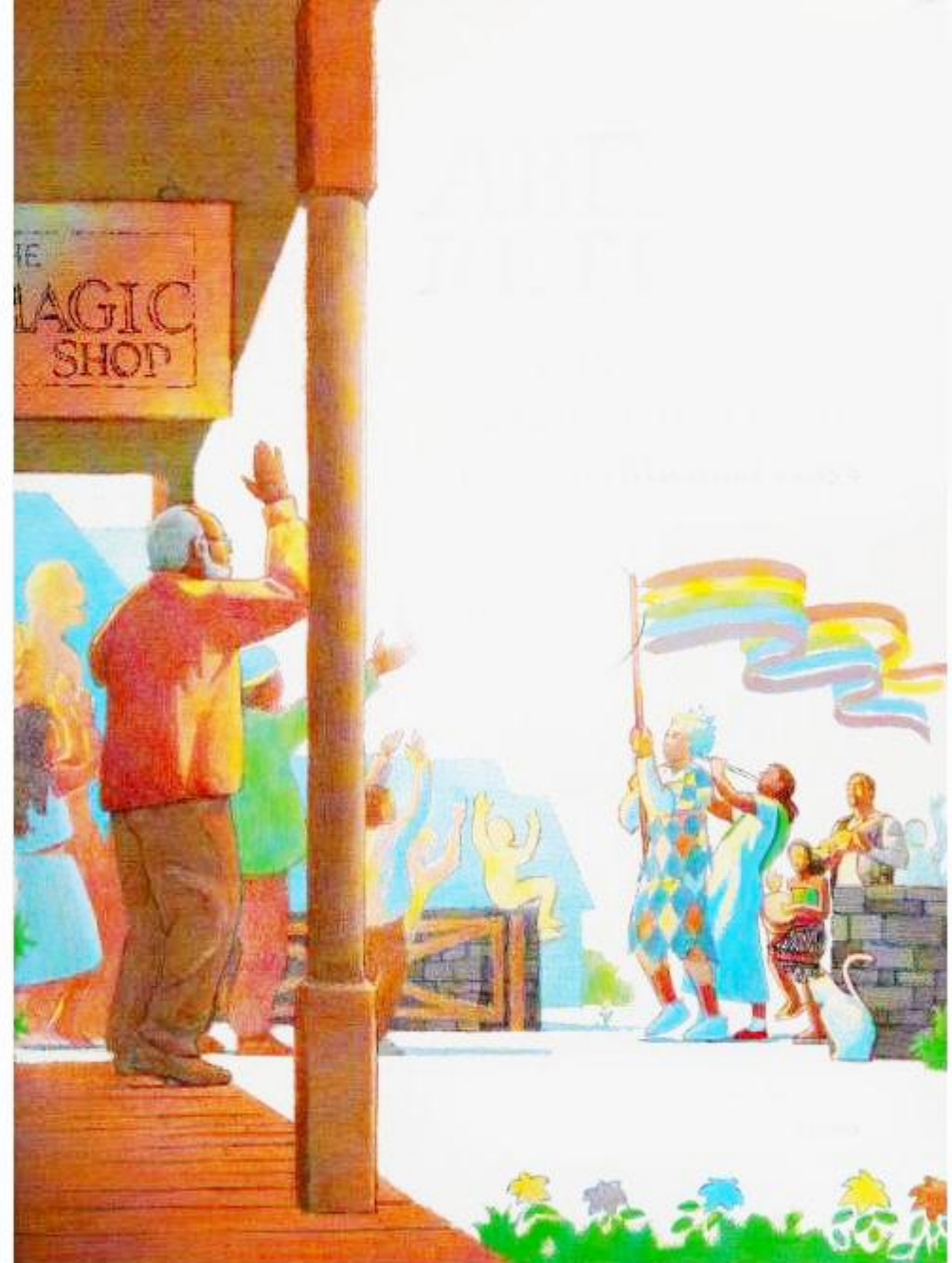
एक दिन एक छोटी लड़की ने अपना ड्रम बजाते हुए शहर की सड़कों पर मार्च किया.
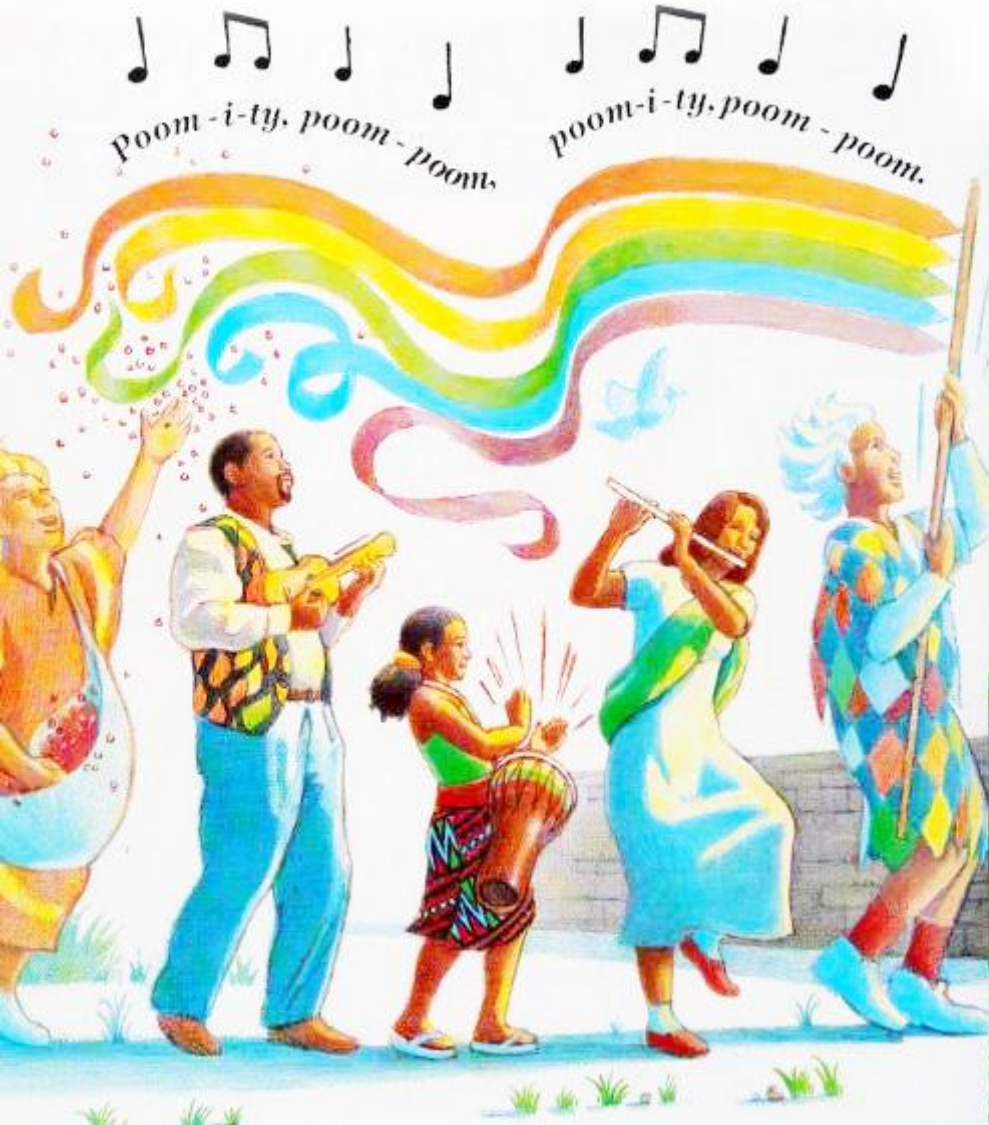
उसके पिता ने उकुलेले बजाया और माँ ने बाँसुरी बजाई. उन तीनों का एक घरेलू बैंड था. अगर कहीं कोई शादी या जन्मदिन की पार्टी होती, तो उस घरेलू बैंड को वहां ज़रूर आमंत्रित किया जाता था.
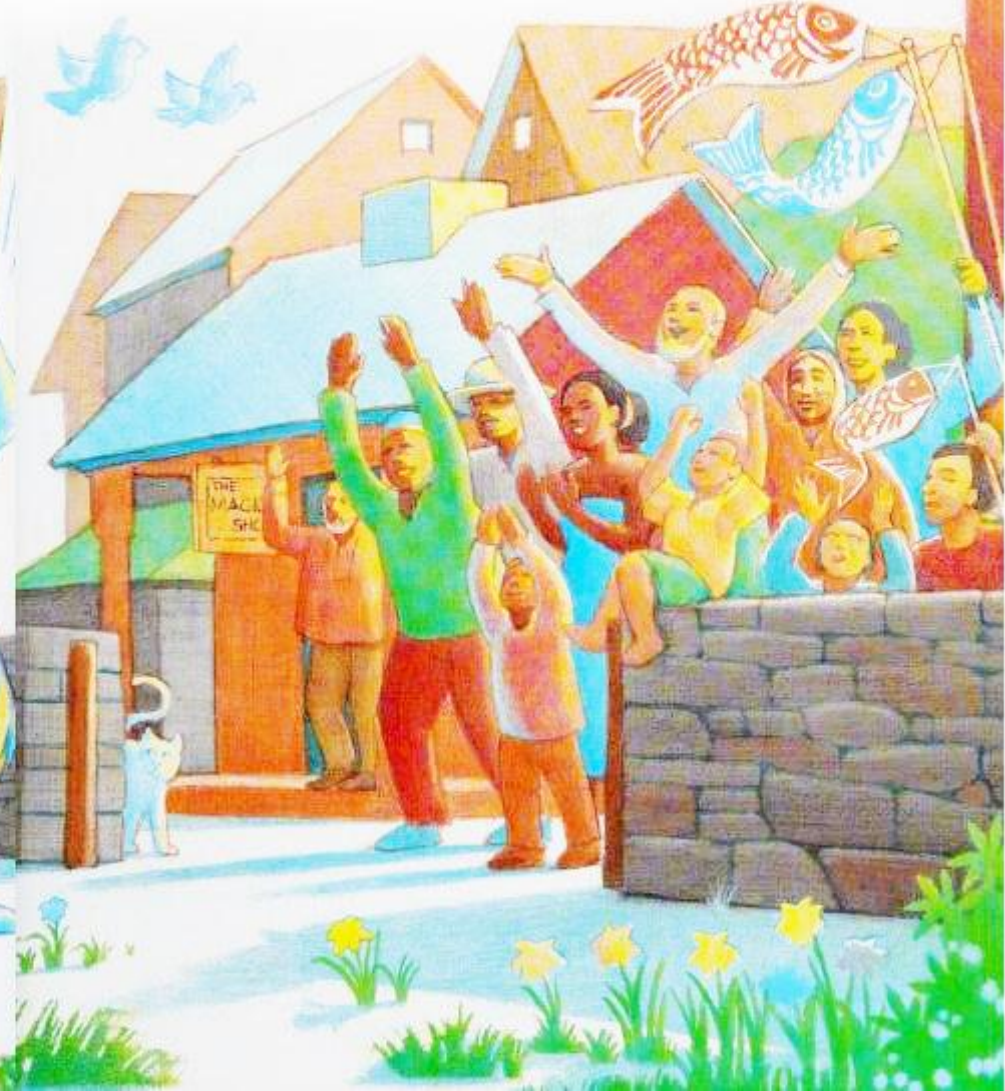
लेकिन उनका छोटा शहर बड़ी मुश्किल में फंसा था. आबादी तेज़ी से बढ़ी थी और शहर फैला था. जो घाटी कभी जंगलों से हरी-भरी थी, वो अब नंगी हो गई थी. यहां तक कि अब वसंत में भी शहर में बाढ़ आती थी. और हर गर्मी में शहर में सूखा पड़ता था.

क्या स्थिति को बदलने के लिए कुछ किया जा सकता था?

नगरवासियों ने एक साथ मिलकर उस पर चर्चा की. "अगर हम एक छोटे बांध का निर्माण करें," उन्होंने कहा, "तो हम वसंत की बारिश को रोक सकते हैं और गर्मियों में उस पानी का खेती के लिए उपयोग कर सकते हैं."
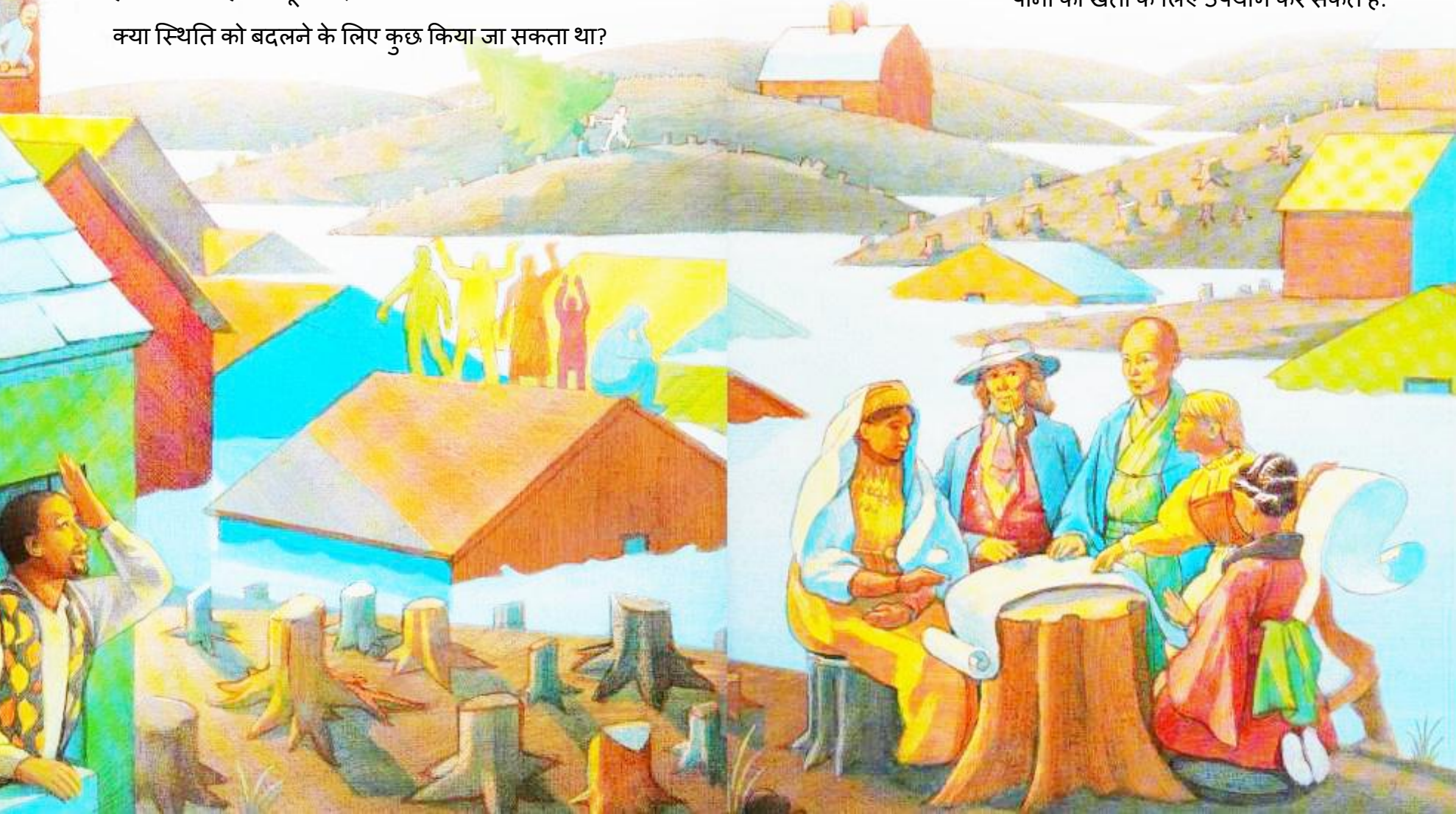
सोच-विचारकर योजना बनाने के बाद, शहर के लोगों ने नया बांध बनाना शुरू किया. हर किसी ने उसमें मदद दी - सबने खुदाई की और खुदाई की.

पर देखो, आगे क्या हुआ?

एक बोल्डर ने आगे की खुदाई रोक दी. वो शुरू में दिखने में इतना बड़ा नहीं लगा, लेकिन वो वास्तव में एक बहुत बड़ी चट्टान थी.
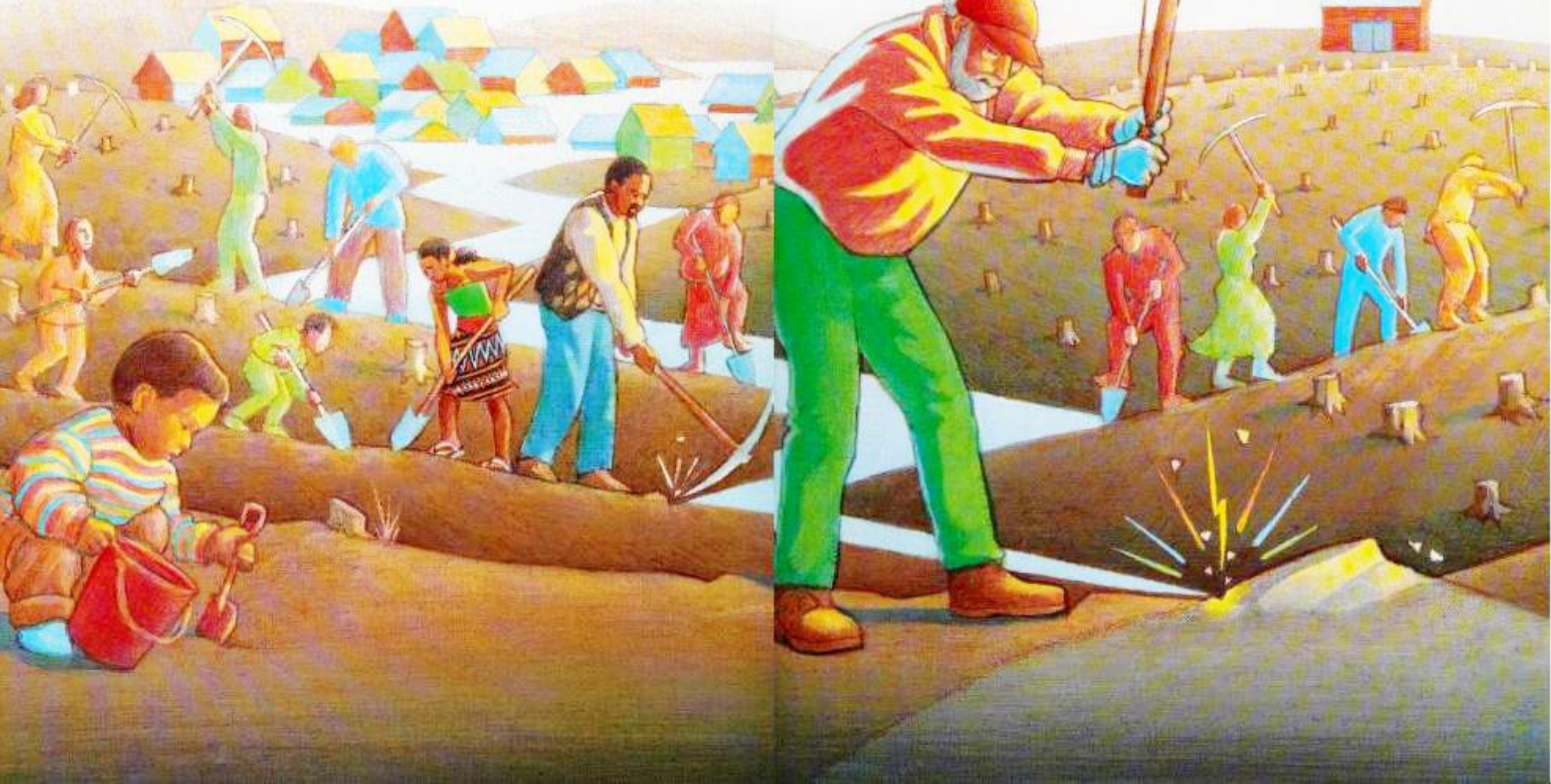
शहरवासियों ने सोचा कि वे उस चट्टान के आसपास खुदाई करके उसे निकाल पाएंगे. लेकिन जितनी अधिक मिट्टी उन्होंने खोदी उन्हें उतनी ही बड़ी चट्टान नीचे मिली.

बोल्डर बेहद बड़ा - एकदम भीमकाय था!

उन्होंने पुली, लीवर और क्रेन से बोल्डर को निकालने की कोशिश की. लेकिन बोल्डर अपनी जगह से टस-से-मस नहीं हुआ. अब बाँध का काम रुक गया.
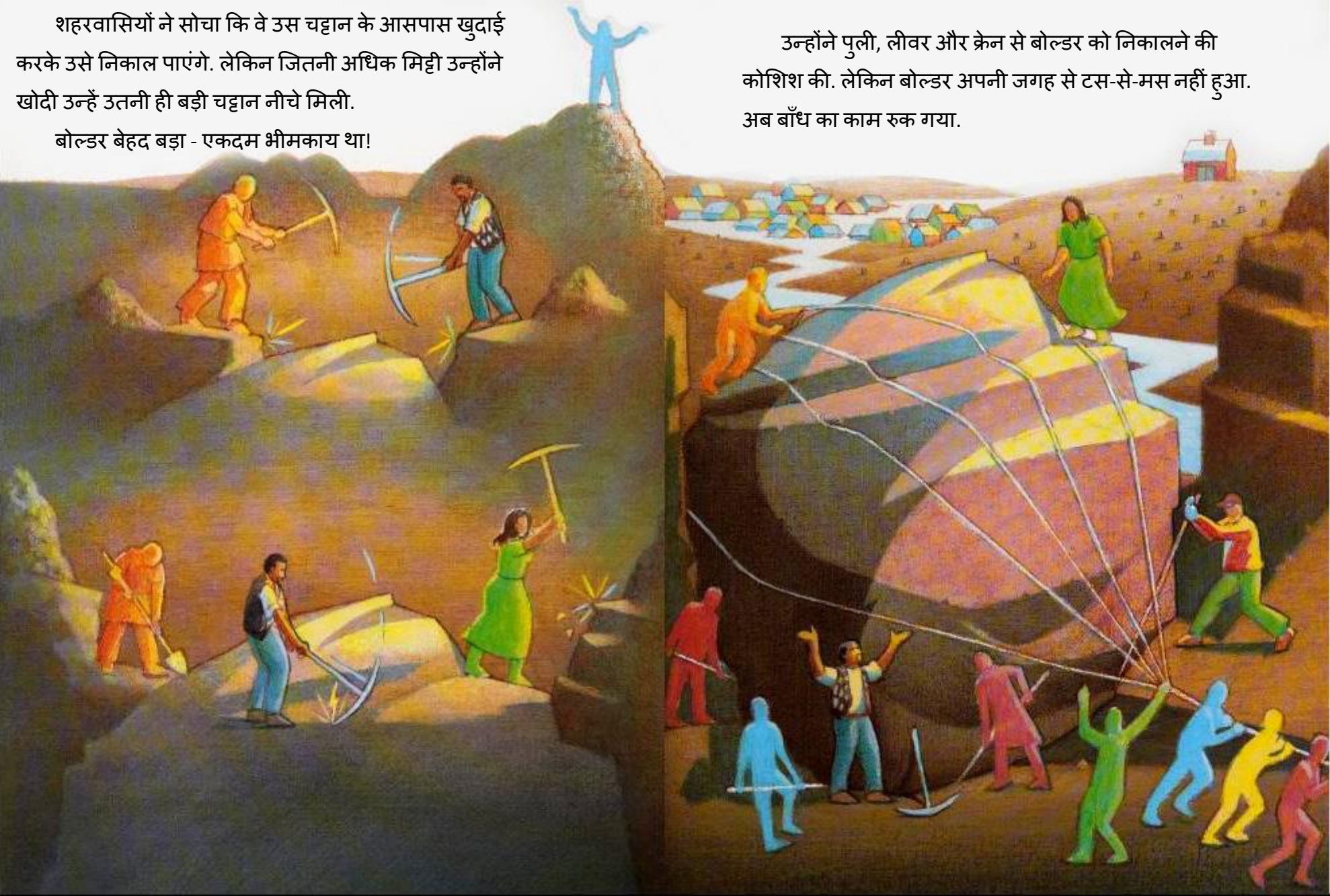
पर शहर में लोगों को अभी भी उस दैत्य की कहानियां याद थीं जो पुराने ज़माने में वहां रहता था. उस दैत्य का नाम अबियोयो था. लोगों के अनुसार अबियोयो एक पेड़ जितना ऊंचा था और वो लोगों को ज़िंदा चबा सकता था. लेकिन उस छोटी लड़की को पता था कि बहुत पहले उसके पिता और दादाजी ने अबियोयो को गायब करके उनके शहर को बचाया था.

"पापा," छोटी लड़की ने कहा. "मैं शर्त लगाकर कह सकती हूं कि अबियोयो ज़रूर उस विशाल चट्टान को हटा पायेगा."

उसके पिता हँसे. "मुझे भी लगता है कि हमें उसे वापिस लाना चाहिए."

"फिर हम उसे वापस क्यों नहीं लायें?" लड़की ने कहा. "दादाजी के पास अभी भी उनकी जादू की छड़ी है. एक बार जब अबियोयो चट्टान को हटा देगा तो दादाजी ज़ूप! ज़ूप! करके उसे फिर से गायब कर सकते हैं."
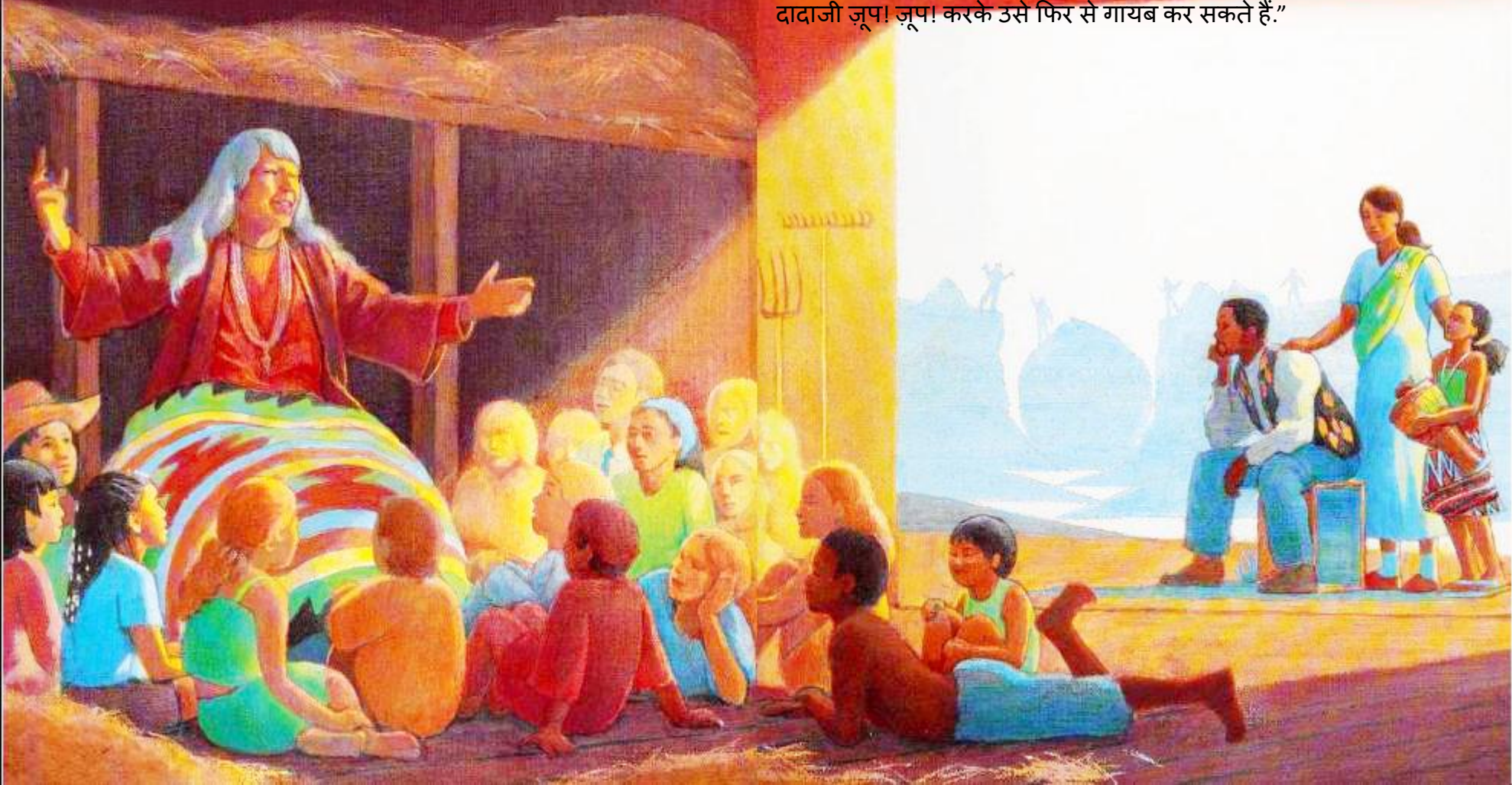
"अबियोयो को वापस लाओ?" उसकी माँ ने कहा. "उसे, जो लोगों को कच्चा चबाता है?"

"हम अबियोयो के लिए बहुत स्वादिष्ट भोजन बनाएंगे, फिर वो इंसानों को नहीं खाएगा," छोटी लड़की ने कहा.

"और जब हमारे पास उसकी पसंद की खाने चीजों ख़त्म हो जाएँगी, तो?" उसकी माँ से पूछा.

"फिर हम अबियोयो ले लिए प्यारे-प्यारे गाने गाएंगे!" छोटी लड़की ने कहा. "फिर वो हम पर गुस्सा नहीं होगा."

"गाने?" पिता ने कहा. "शायद इस बार गानों से काम न बने."

"लेकिन अगर हम अबियोयो को वापस नहीं लाए," छोटी लड़की ने कहा, "तो फिर हमारा बांध कभी पूरा नहीं होगा."

फिर दोपहर को परिवार दादाजी से मिलने गया.
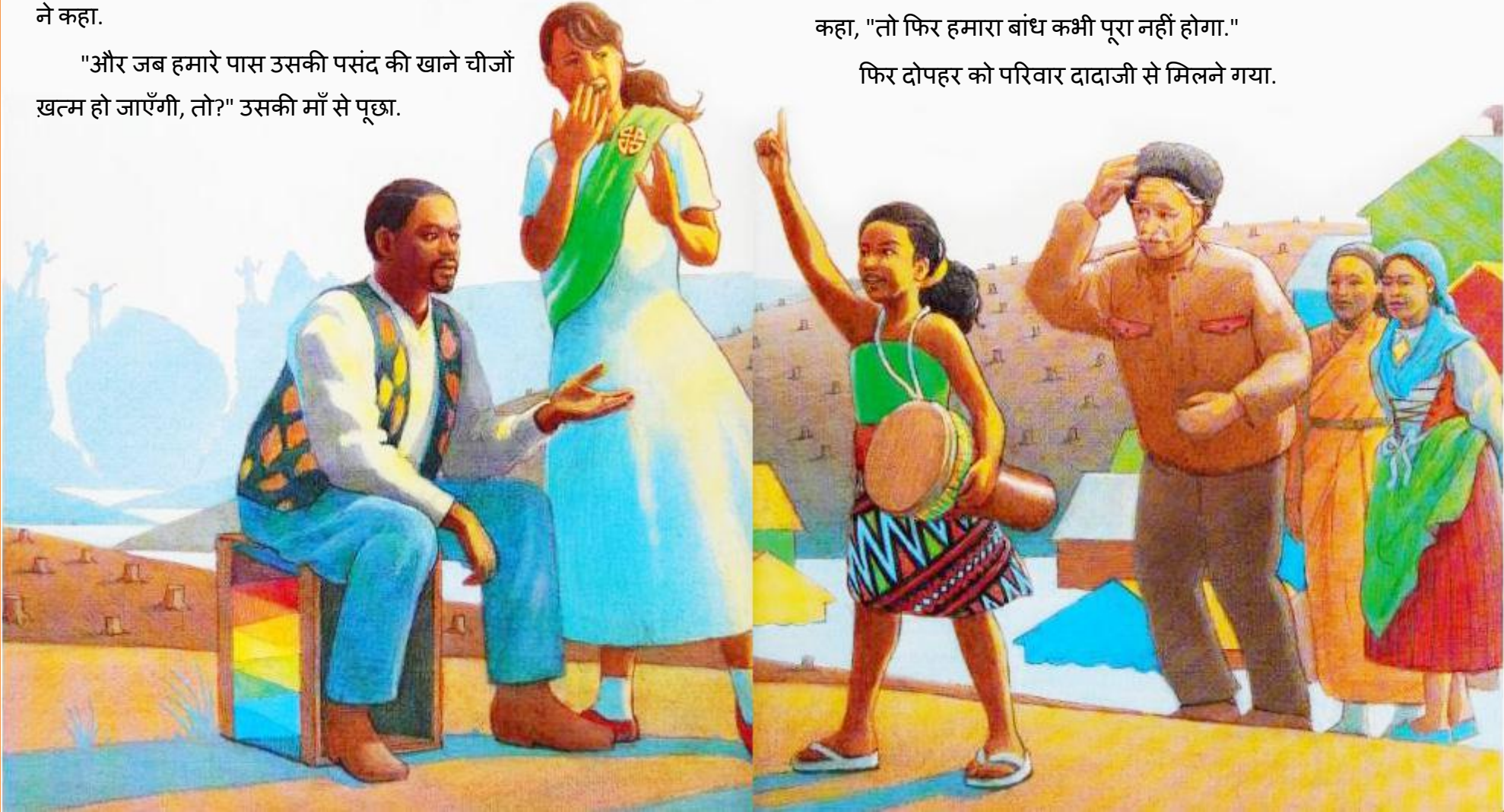
"अबियोयो की वापसी?" दादाजी ने कहा. "वो भूखा दैत्य बहुत खतरनाक साबित होगा.""लेकिन उतनी बड़ी चट्टान को हिलाना और किसी के बस की बात नहीं है," छोटी लड़की ने कहा.

"शायद तुम्हारी बात ठीक है," दादाजी ने कहा. फिर दादाजी ने अपने जादुई पिटारे को खोला और उसमें से अपनी छड़ी निकाली. "चलो ज़रा देखते हैं कि वो पुरानी छड़ी क्या अभी भी काम करती है."
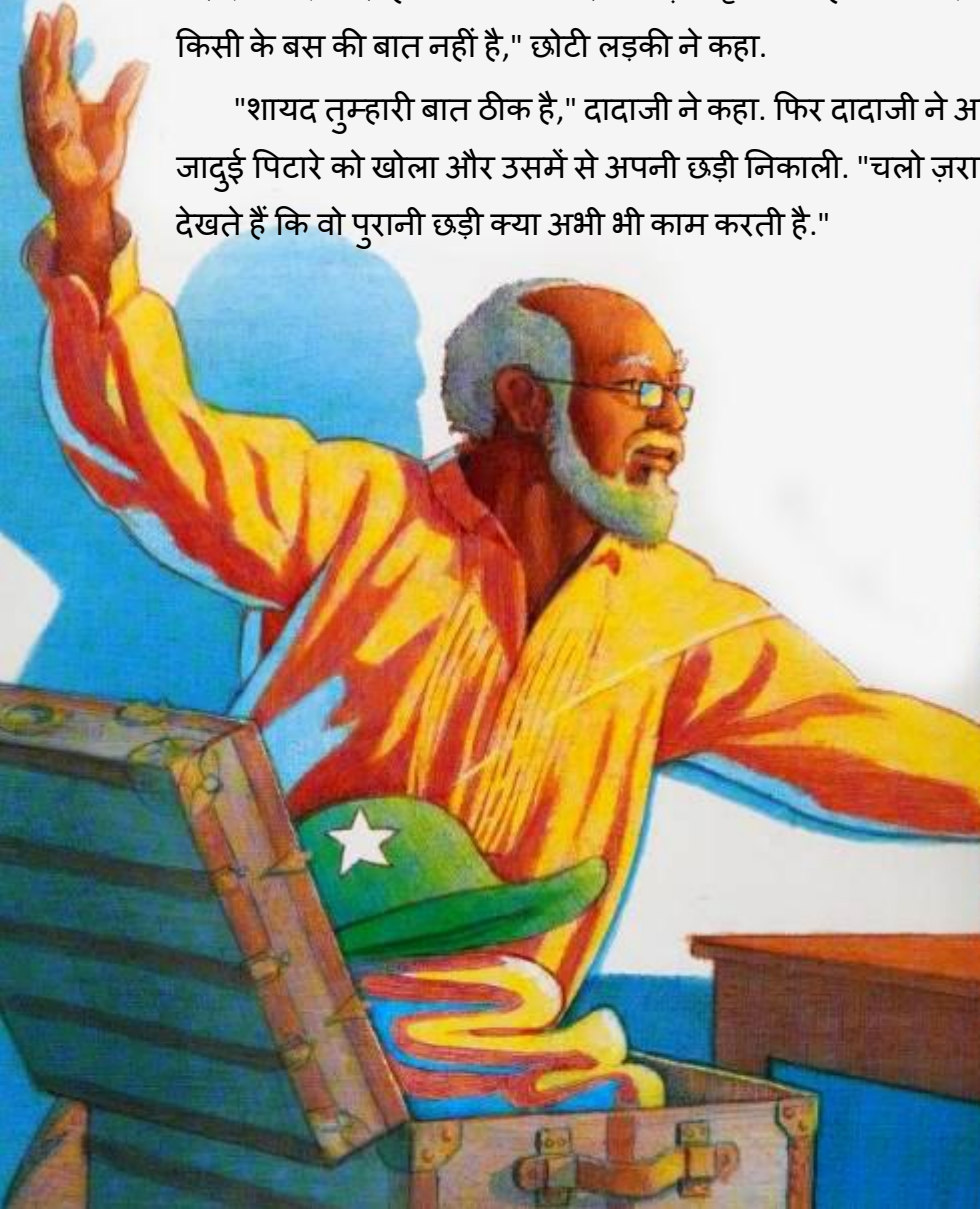
फिर एक ज़ूप! के साथ छोटी लड़की का ड्रम अचानक गायब हो गया.

"अरे, दादाजी, मेरा ड्रम वापस करें."

ज़ूप! ड्रम फिर से बज उठा.

"लगता है कि मेरी जादुई छड़ी अभी भी काम करती है," दादाजी ने खीसे नपोरते हुए कहा.
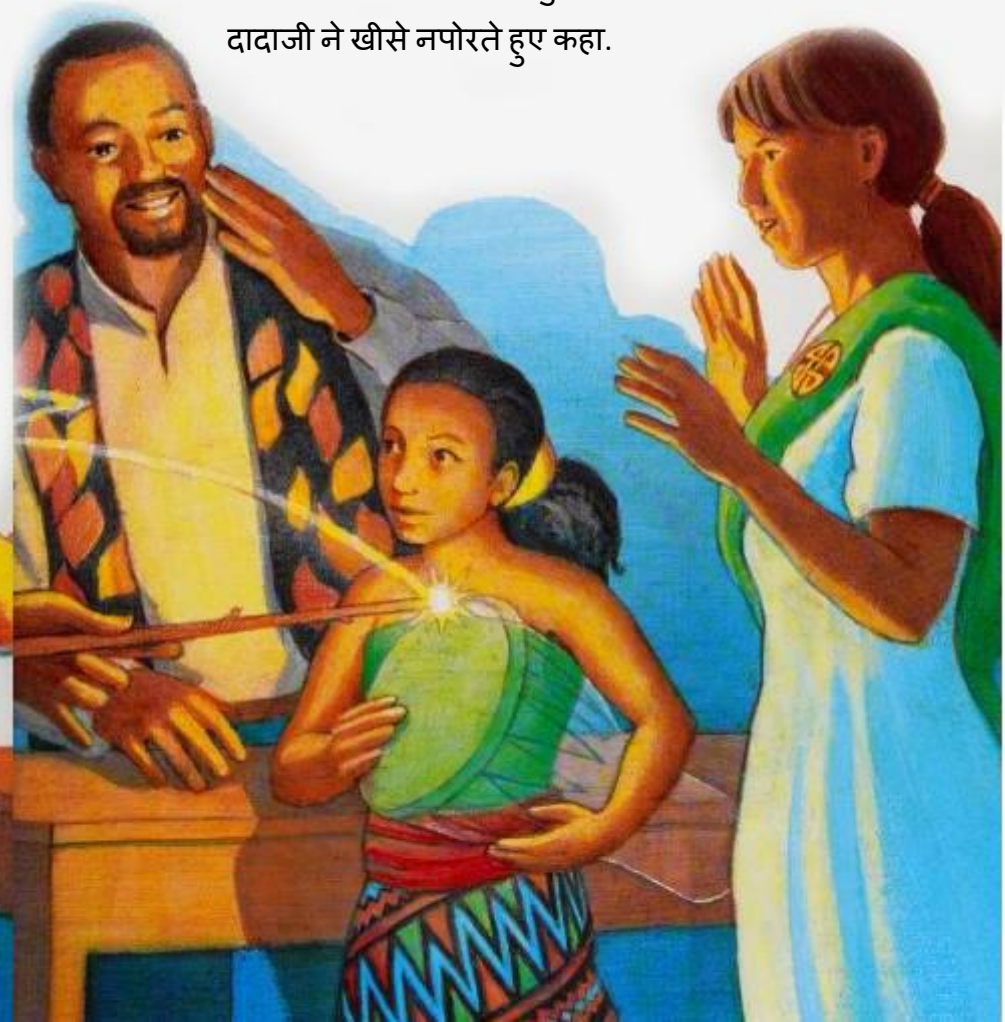
अगले कुछ दिनों तक शहर के सभी लोगों ने सबसे बेहतरीन और स्वादिष्ट व्यंजन पकाए और अपने सर्वश्रेष्ठ गानों का अभ्यास किया. अंत में सब तैयारियां पूरी हुईं.
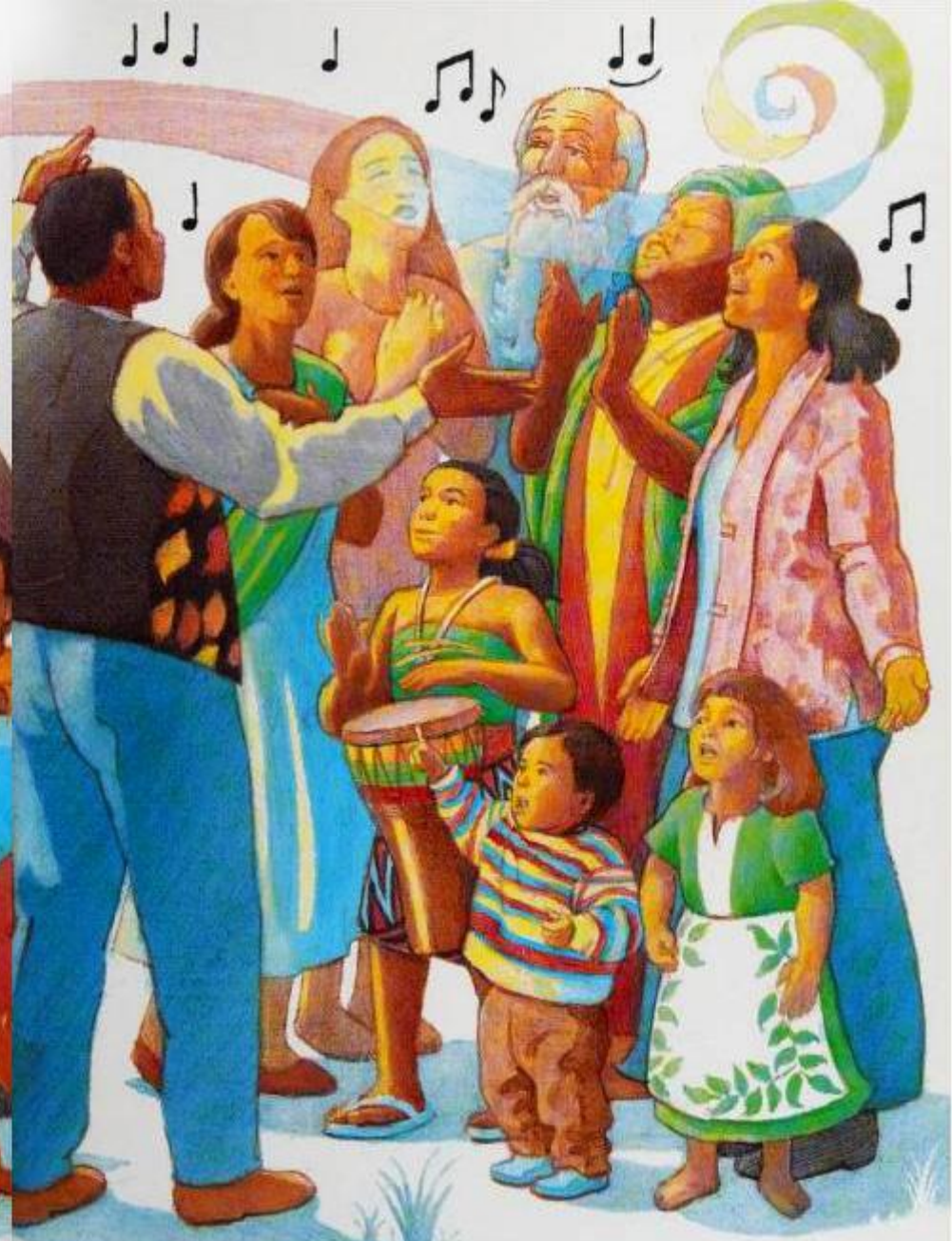
दादाजी ने ख़ास किस्म की लकड़ी से एक विशेष आग जलाई जिसने एक विशेष प्रकार का धुआं बनाया. फिर दादाजी ने अपनी छड़ी लहराई और जादुई मंत्रों को दोहराया ...

... ज़ूप!
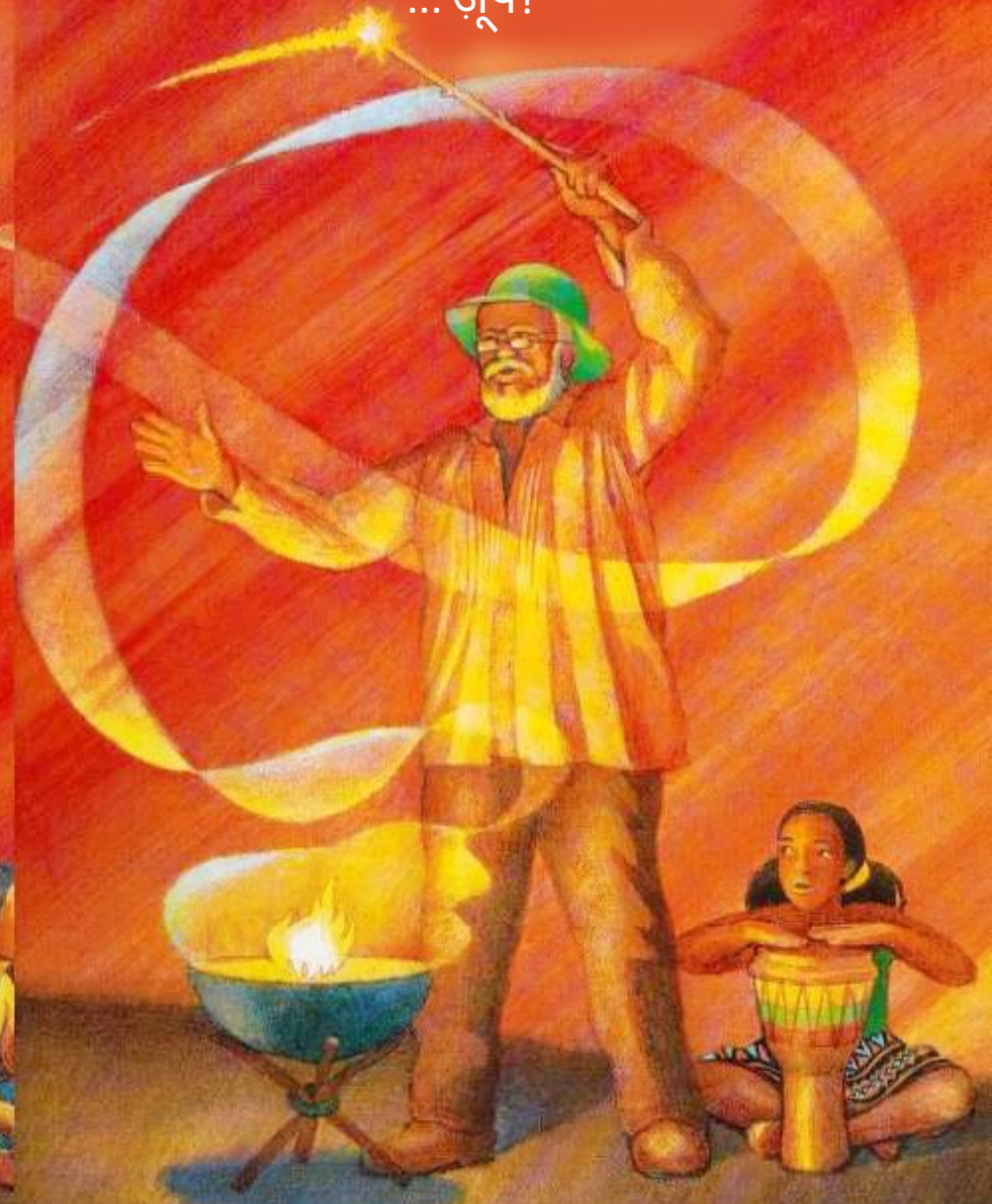
अबियोयो हाज़िर हुआ! वो हमेशा की तरह भीमकाय था! वो एक ऊंचे पेड़ से भी बड़ा था! उसके लंबे नाखूनों, नोंकदार दांतों और उसके बदबूदार पैरों को देखकर महिलायें चिल्लाने लगीं. "बाप-रे बाप!"

उस देखकर हट्टे-कट्टे मर्द बेहोश हो गए.

"अबियोयो लौटकर आया है!” वे चिल्लाए.

अबियोयो ने जम्हाई ली
और फिर एक गहरी साँस ली.

"ओह्ह्, मुझे बड़ी भूख लगी है!"

शहरवासियों ने उसे थालियों में स्पेगेटी, टोफू, चिकन, स्टीक, झींगा चावल, सब्ज़ी, फल और अनेकों स्वादिष्ट चीज़ें दीं.

फिर अबियोयो ने अपना बड़ा मुँह खोला .

डकार! स्पेगेटी की पूरी थाली गायब!

डकार! पूरा स्ट्रॉबेरी केक
एक कौर में गायब!

जल्द ही अबियोयो सारा खाना गया.

"बढ़िया!" फिर दैत्य ने अपने भरे पेट को रगड़ा. छोटी बहादुरी लड़की दैत्य के करीब गई.

"अबियोयो! क्या तुम अभी भी
शक्तिशाली और ताकतवर हो?" उसने पूछा.
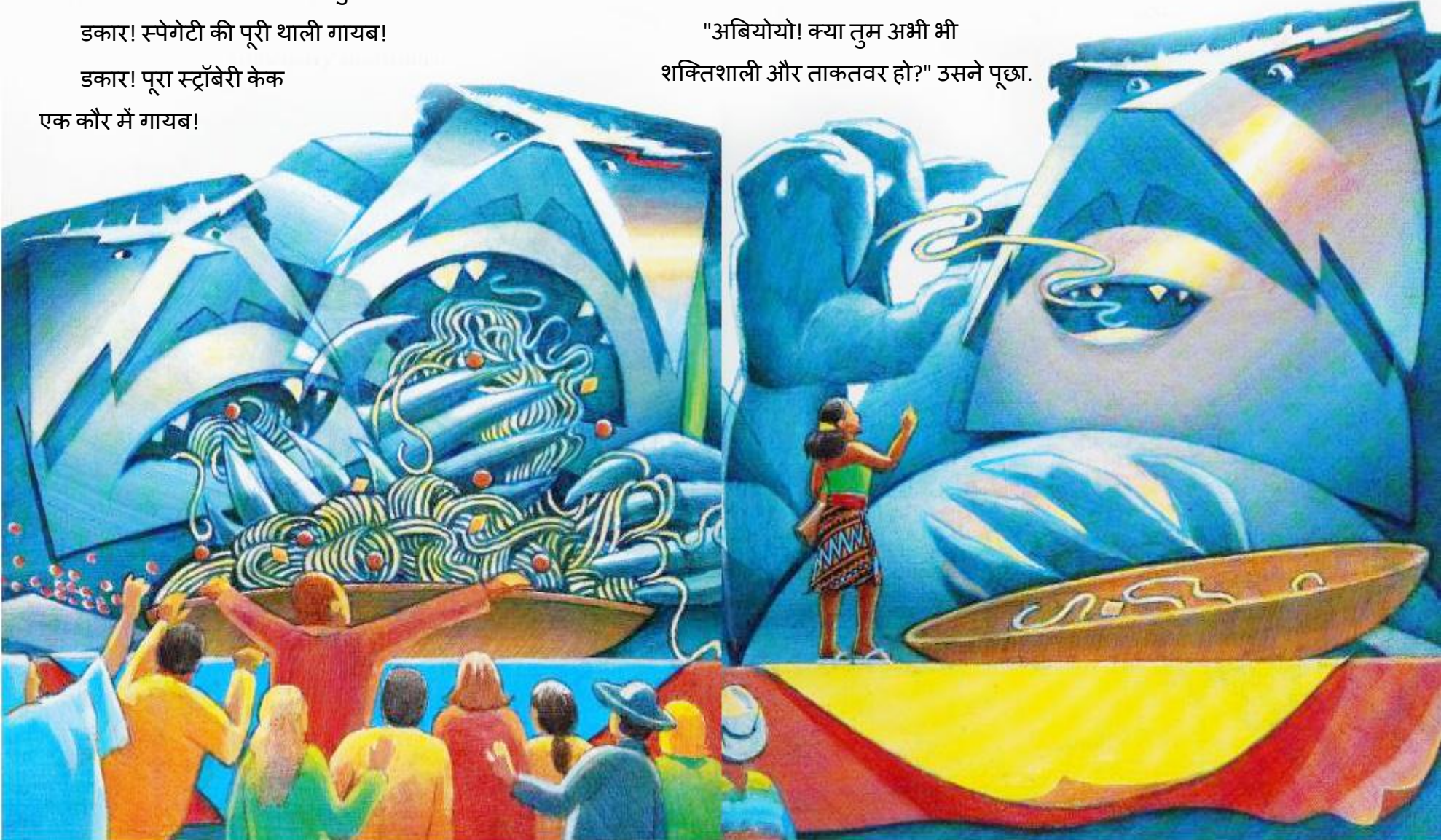
"बिल्कुल!" अबियोयो ज़ोर से चिल्लाया.

"क्या तुम उस विशाल बोल्डर को उठा पाओगे?"

फिर अबियोयो ने अपने दोनों हाथों से उस भारी बोल्डर को उठाया और उसे हवा में फेंका. बोल्डर हवा में ऊपर उठा!

सौ फीट!

दो सौ फीट!

अंत में वो नीचे आकर गिरा!

धड़ाम!

"अबियोयो की हुर्रे!" लोग एक-दूसरे से गले मिले. वे नाचे. ख़ुशी से कुत्ते भी भौंकने लगे.
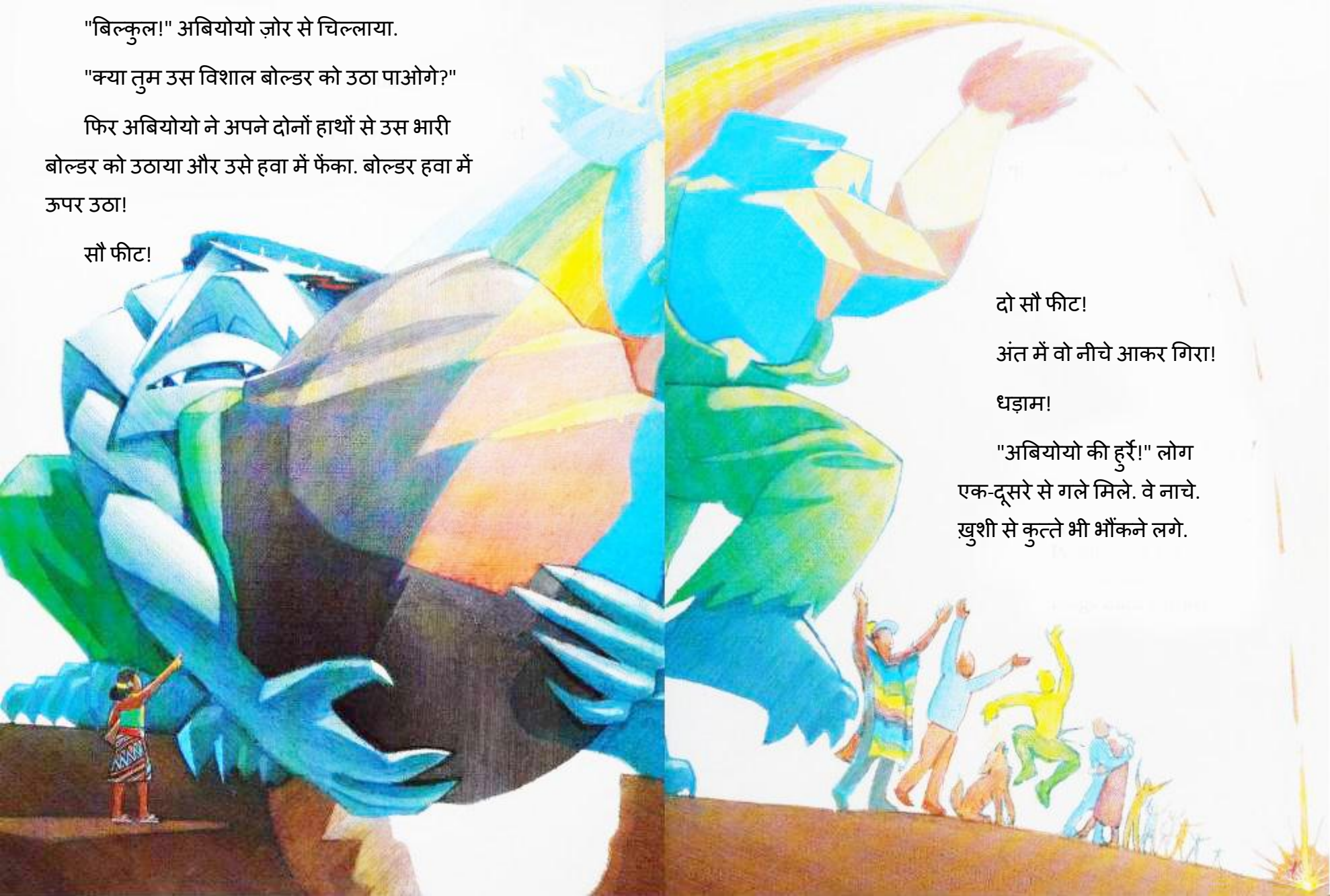
"मुझे और भूख लगी है!" अबियोयो चिल्लाया.

"पर सब खाना तो ख़त्म हो गया!" अबियोयो गुस्सा हुआ.

तभी छोटी लड़की ने अपना ड्रम उठाया.

पूम-पूम! पूम-पूम!

उसके पिता ने अपना उकुलेले बजाना शुरू किया.

पीआई! पीआई!

उनके साथ माँ ने बांसुरी पर सुर मिलाया

टूटिल-टूट! टूटिल-टूट!

फिर हर शख्स से गाना शुरू किया.

"यह मेरा गीत है?"

बैंड तेजी से बजाने लगा.
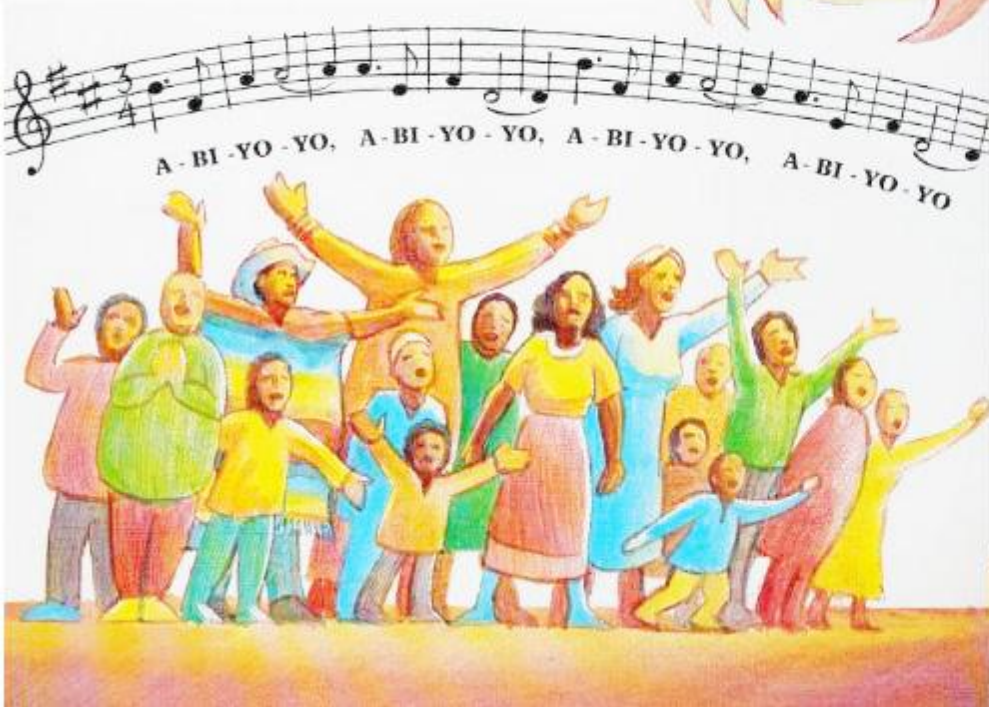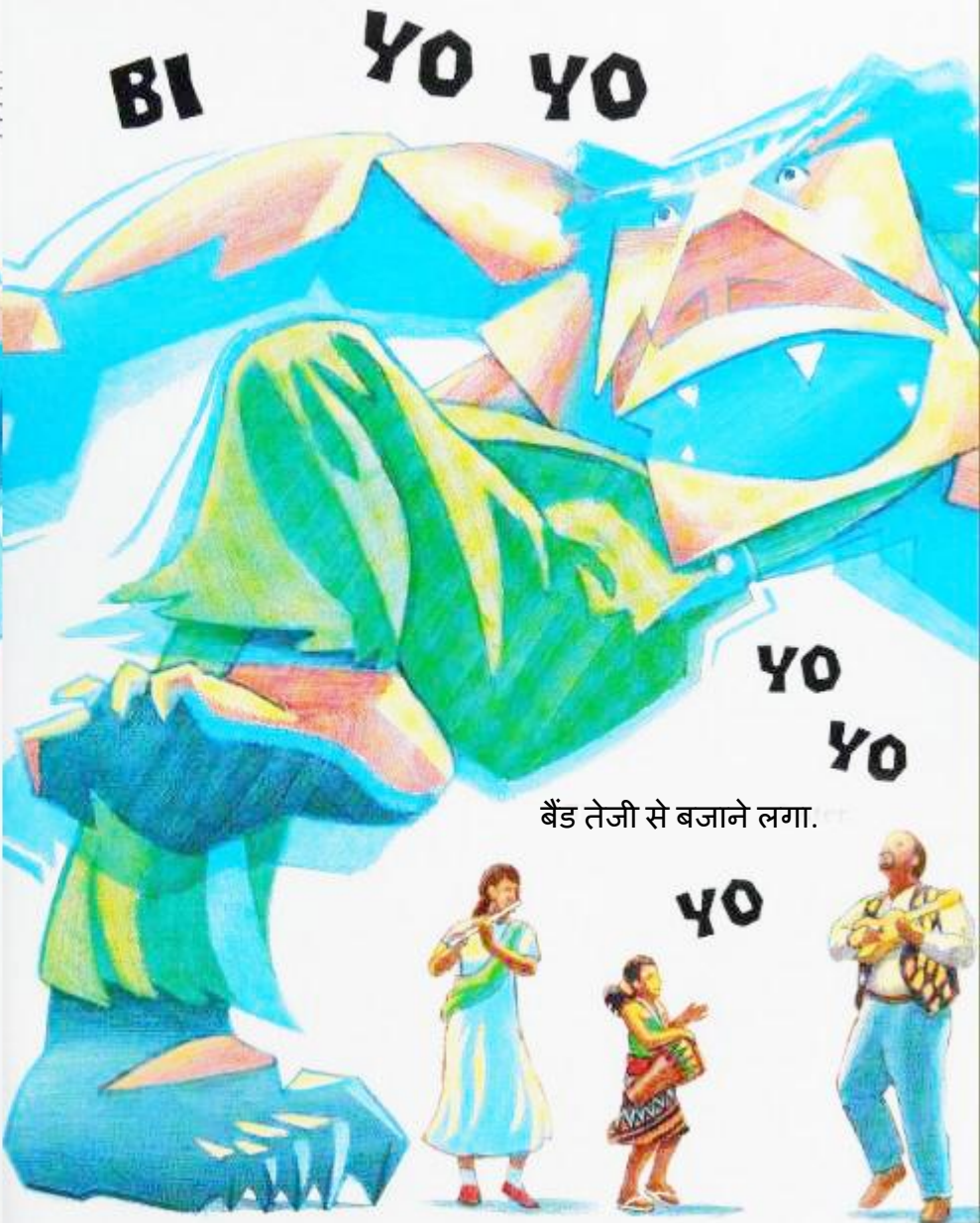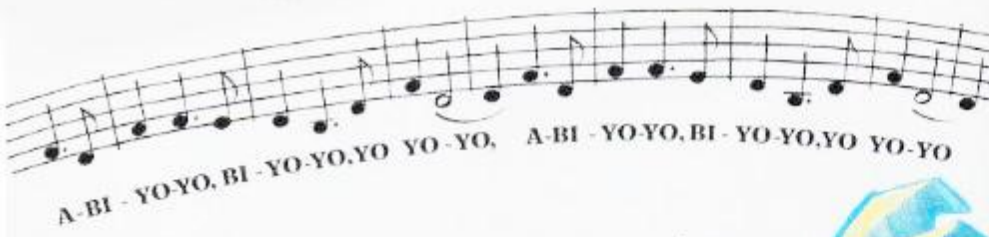
और तेज़ी से!

"अरे!" अबियोयो घुर्राया.

"अब मैं थक गया हूँ."

फिर वो लेट गया और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं. जल्द ही वो खर्राटें लेने लगा.

"अब सही मौका है!" छोटी लड़की ने कहा. "पर दादाजी कहाँ हैं? और उनकी जादू की छड़ी कहाँ है?"

"दादाजी अभी तो यहीं पर थे," माँ ने इशारे से कहा.

"अरे नहीं!" छोटी लड़की रोई. "दादाजी, आप ठीक तो हैं?"

"हाँ, मैं ठीक हूँ," दादाजी ने कहा. "बोल्डर मुझ पर गिरते-गिरते बचा."

"लेकिन आपकी जादुई छड़ी कहा है?" छोटी लड़की ने पूछा.

"मुझे पता नहीं," उन्होंने कहा.
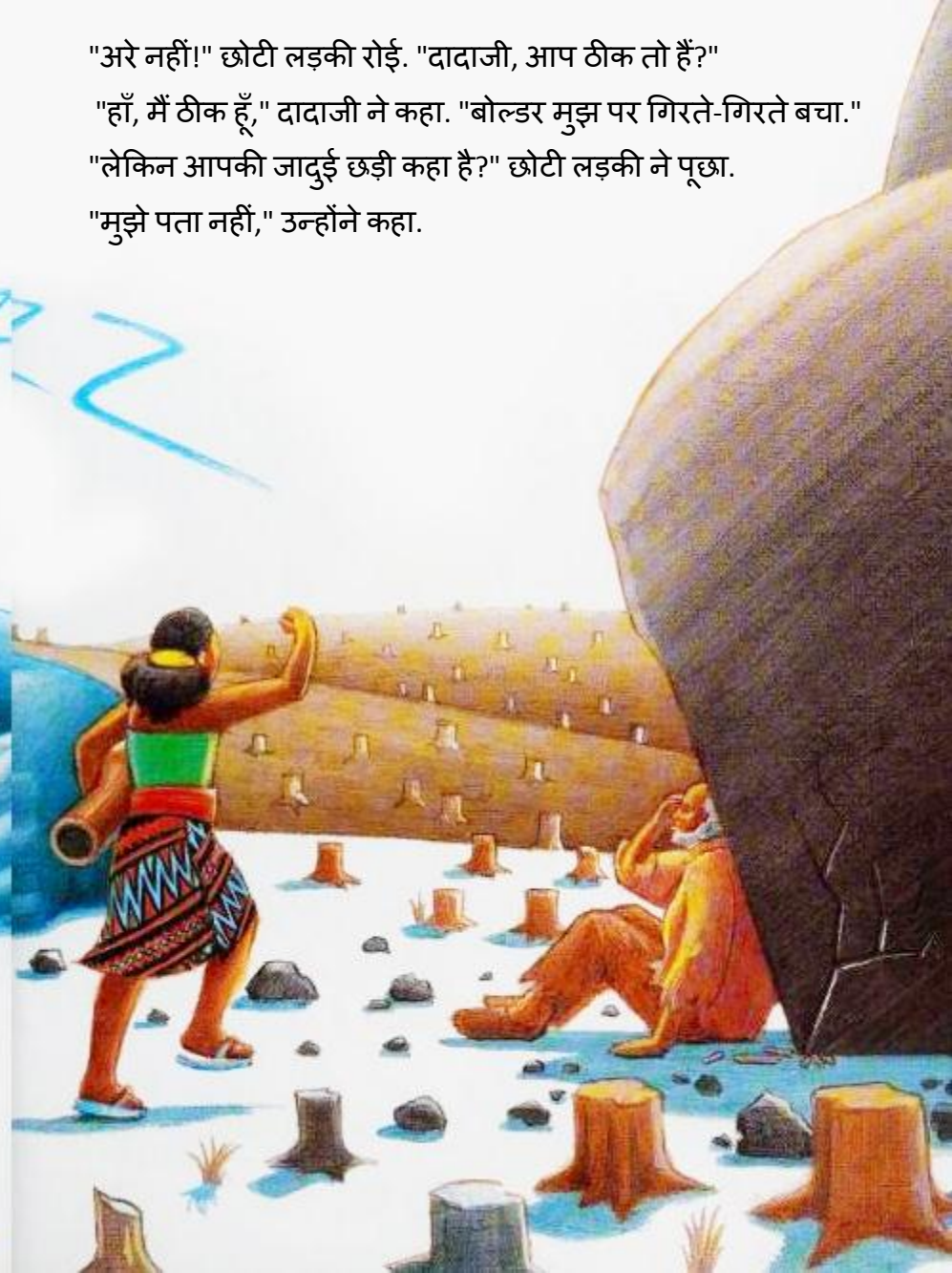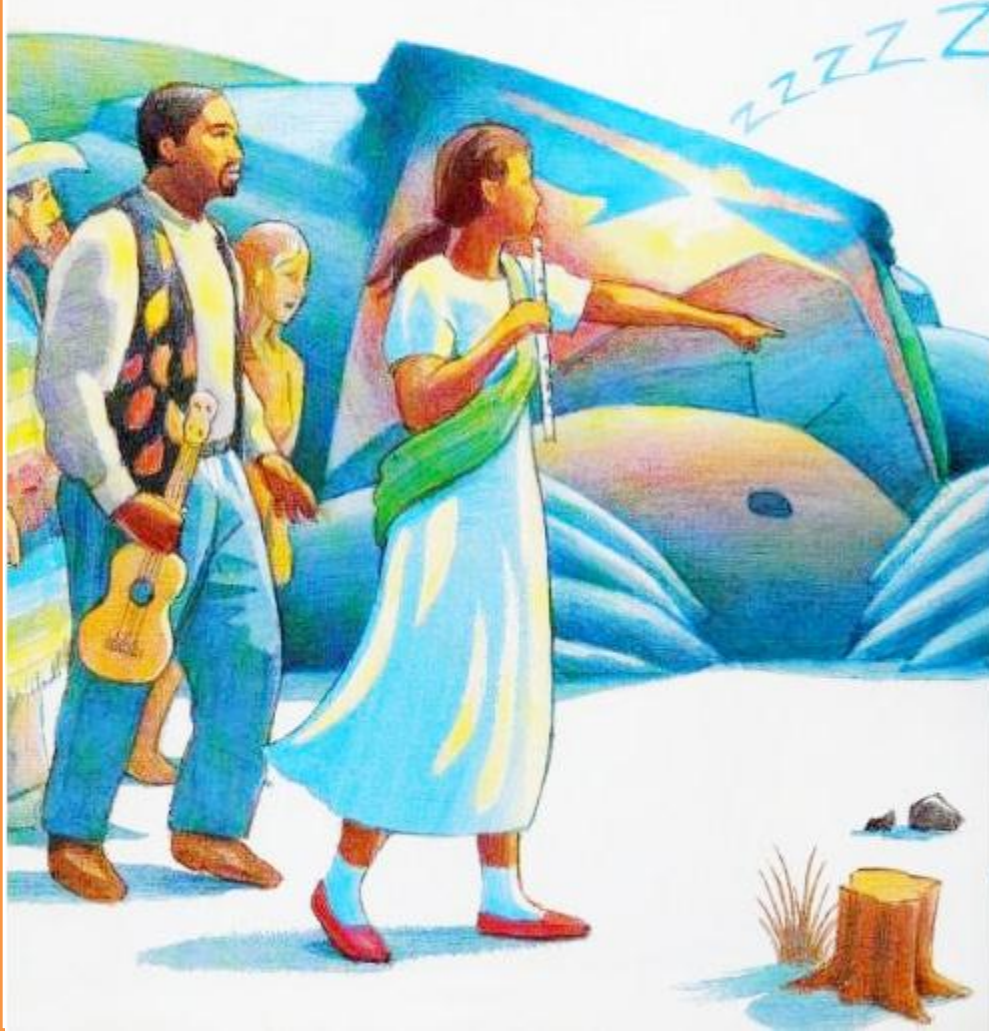
"वो यहाँ है," छोटी लड़की के पिता ने कहा. सब लोगों ने उस ओर देखा. सबसे पहले टूटी हुई छड़ी को और फिर खर्राटे लेते हुए दैत्य को. फिर उन्होंने छोटी लड़की को देखा.

"आपने ही हमें इसमें फंसाया है," शहरवासियों ने कहा. "अब आप ही हमें बाहर निकालें."

"अब करने के लिए केवल एक ही चीज़ बची है," छोटी लड़की ने कहा. "चलें, हम लोग अबियोयो के लिए बहुत सारा अच्छा खाना बनाएं, फिर वो लोगों को खाना नहीं चाहेगा. और यदि हम उसके लिए बहुत सारे अच्छे गीत गाएंगे, तो वो हम पर गुस्सा नहीं होगा."

इस तरह धीरे-धीरे उस छोटे शहर ने, अपने दैत्य के साथ जीवन जीना सीखा. अबियोयो खलिहान में सोता था. उसका सिर एक तरफ से बाहर निकलता था और उसके पैर दूसरे ओर थे. उसने अपने गंदे दांतों को ब्रश करना भी सीख लिया था.

अबियोयो, उस छोटी लड़की और उसके माता-पिता से इतना प्यार करने लगा था वे उसका परिवार बन गए थे. उन्होंने उसके बदबूदार पैर धोने में भी मदद की थी.

और नगरवासी?
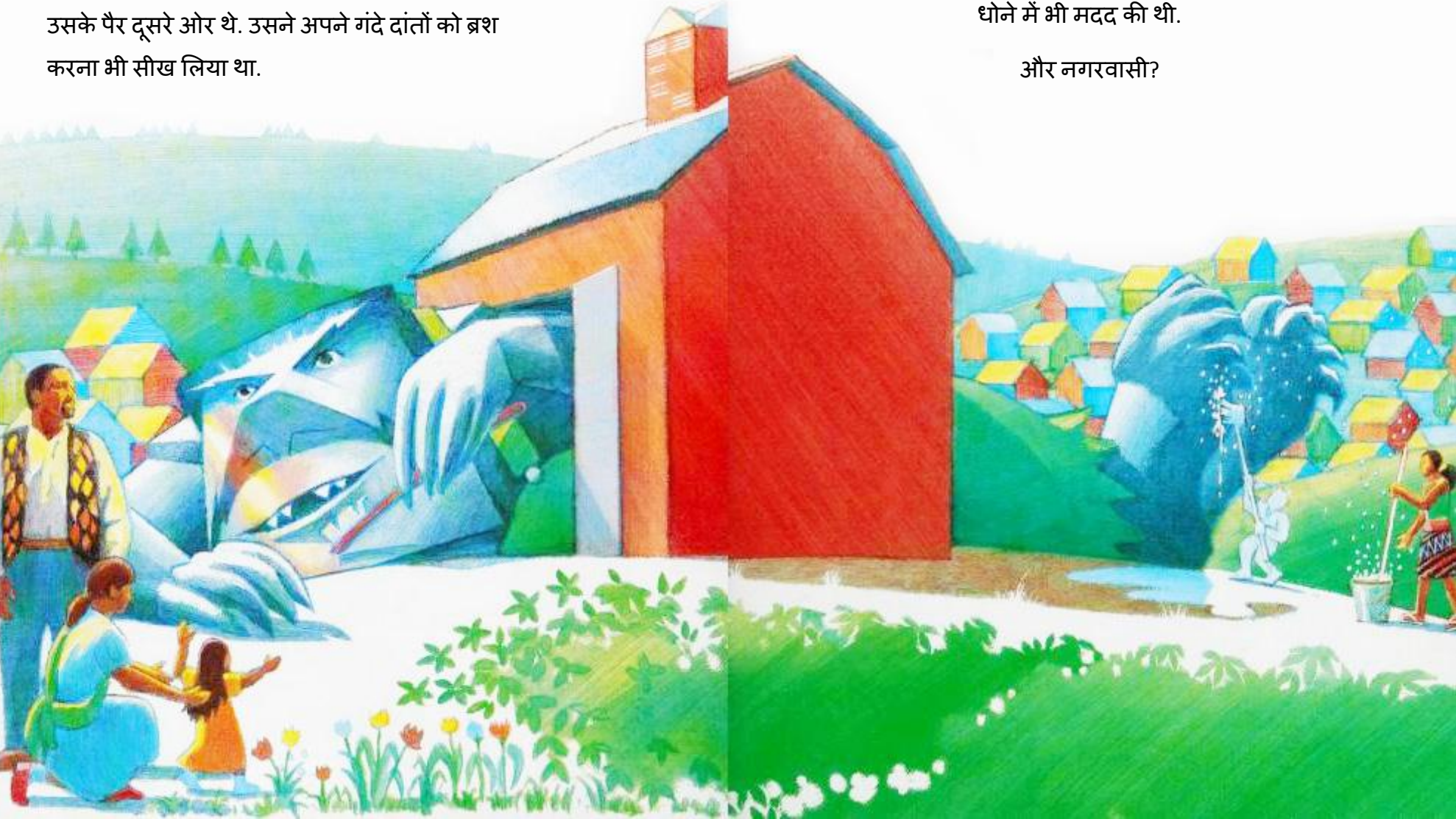
खैर, अबियोयो की मदद से, उन्होंने अपना छोटा बांध पूरा किया. पर इससे भी महत्वपूर्ण था की शहरवासी अब अच्छा भोजन हमेशा दूसरों को बांटते थे और वे सब के साथ अच्छे गाने भी साझा करते थे.

जब आखिरी बार किसी ने अबियोयो को देखा, तो वो खुशी से नए पेड़ लगा रहा था.

अंत